...EHTA LIBRARY
...S University of Baroda

रु प रे खा

गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा की
पी एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ. रमणलाल पाठक
(पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग)

FWCS
Bapu Lal

प्रस्तुतकर्त्री
कु. सुनीता के. चंद्रात्रे

P/Th
8797

हिन्दी विभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
बडौदा
मई, १९९७

रूपरेखा

गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य

मार्गदर्शक
डॉ० रमणलाल पाठक
सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष, हिन्दी अनुभाग
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
वडोदरा.

प्रस्तुतकर्ता
सुनिता के चंद्रात्रे
शोध छात्रा
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
वडोदरा.

गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य

§शोध प्रबन्ध§

की

विषय - सूची

1§ भूमिका

1§ गुजरात में हिन्दी भाषा का उद्‌भव एवं विकास

2§ आधुनिकता एवं आधुनिक काव्य की परिभाषा, पृष्ठभूमि काव्यांदोलन तथा प्रवृत्तियाँ

3§ प्रश्नावली एवं गुजरात के हिन्दी कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का साहित्यिक परिचय

4§ भावपक्ष

5§ कला पक्ष

6§ काव्य रूप

7§ साक्षात्कार

8§ उपसंहार

9§ संदर्भ ग्रंथ सूची

....

कई वर्षों से मेरे मस्तिष्क में शोध – प्रबन्ध के बारे में विविध विचार आते रहे । कॉलेज के प्रथम वर्ष से ही मेरा इस दिशा में चिंतन दृढ़ होता गया । यही कारण है कि मैंने अभ्यास के साथ-साथ विविध विषयों का मनोयोग पूर्वक अध्ययन किया । अनुस्नातक होने के पश्चात् मैं तुरन्त ही शोध प्रबन्ध के कार्य में जुट जाना चाहती थी किन्तु बी०एड० जैसे कोर्स में प्रवेश मिल जाने से मैंने अपने पाँव पर खड़े रहने के विचार से वह भी पूरा कर लिया और नौकरी कर ली ।

तत्पश्चात् मैं डॉ० रमणलाल पाठकजी से मिली । वे व्यक्तिगत रूप से मुझे जानते थे । यही कारण है कि उन्होंने मुझे मार्गदर्शन देना स्वीकार किया । श्री पाठकजी जिन्होंने स्वयं गुजरात के हिन्दी साहित्य पर ही काम किया है । उनकी पहले से ही अभिलाषा रही है कि गुजरात के हिन्दी लेखकों पर बहुत ही कम काम हुआ है तो ऐसे विषय पर काम हो जो मात्र पदवी प्राप्ति के हेतु न हो कर भविष्य के हिन्दी साहित्य का अध्ययन करनेवाले हिन्दी प्रेमियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो । इतना ही नहीं हिन्दी भाषी प्रदेश के साहित्यकार जो गुजरात के हिन्दी साहित्यकारों के विषय में बहुत कम जानते हैं वे भी उनके साहित्यिक कार्य से परिचित हों ।

गुजरात में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के शोधपरक अध्ययन का आज जो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और गुजरात प्रांत में हिन्दी साहित्य का विकास हमें देखने को मिलता है उसका श्रेय कविवर नागरजी को देना उचित होगा ।

मैं गुजरात के हिन्दी साहित्य के विषय में निष्ठापूर्वक कार्य करना चाहती हूँ क्योंकि यह मेरी जन्मभूमि है । यही कारण है कि विविध विषयों में से मैंने गुजरात के हिन्दी कवियों एवं उनकी रचनाओं पर शोधकार्य करने का निश्चय किया और आदरणीय पाठकजी ने मुझे प्रोत्साहित किया ।

अब प्रश्न यह उठता है कि मैंने आधुनिक काल को ही क्यों चुना ? क्योंकि आधुनिक काल ही एक ऐसा काल है जिसमें साहित्य को विविध विधाओं में वैविध्यपूर्ण सर्जन हुआ है । इनमें भी गुजरात में विशेष रूप से गत् सौ वर्षों में विशिष्ट काव्य कृतियों की विपुल रचना हुई है जिनमें गुजराती भाषी एवं अन्य भाषा भाषी कवियों का विशिष्ट योगदान रहा है ।

गुजरात के आधुनिक काल में हिन्दी के विकास की गतिविधियाँ अपने चरमोत्कर्ष पर है । इसमें अनेक कवियों एवं कवियित्रियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । यों तो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, कवि सम्मेलनों, मुशायरों आदि के माध्यम से इनका प्रचार एवं प्रसार होता रहा है परन्तु इन सब कवियों की रचना - प्रक्रिया तथा कविताओं को एक स्थान पर सुग्रंथित करके उनका मूल्यांकन करने की भावना मेरे हृदय में रही है । इस प्रयत्न में मैं सफल हुई हूँ कि नहीं इसका आकलन तो विद्वत्जन ही भविष्य में करेंगे ।

मेरे लिए यह कार्य बड़ा कठिन रहा क्योंकि इसे मैं पुस्तकालय या घर के कमरे में बैठकर नहीं कर सकती थी । इस विषय को सुचारू रूप से न्याय देने के लिए मुझे अथक प्रयास करना पड़ा है । विभिन्न कवियों के साथ सम्पर्क करना, उनको अनुकूलता के अनुसार उनके साक्षात्कार के लिए उनके घर जाना, उनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं को पाना तथा उनका मूल्यांकन करना यह वास्तव में थका देने वाला कार्य था । फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और अपने कार्य में जुटी रही । मैंने अनेक कवियों से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनकी रचनाओं का संकलन एवं रसास्वादन किया । इस कार्य के लिए मुझे अनेक नगरों का प्रवास करना पड़ा तथा एक ही कवि से उनकी अनुकूलता के अनुसार कई बार मिलना पड़ा और उनके प्रेमपूर्ण सहयोग से मैं इस कार्य को करने में समर्थ हुई हूँ ।

मैंने प्रस्तुत विषय "गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य" लेकर आधुनिक हिन्दी काव्य को गुजरात तक ही की सीमा में बांध लिया परन्तु प्रश्न यह उठता है कि गुजरात की सीमा के अन्तर्गत हम किस-किस को ले सकते हैं ? क्या गुजरात में बसे गुजराती कवियों का ही समावेश प्रस्तुत महानिबंध में होना चाहिए ? या फिर गुजरात में बसे अन्य भाषा-भाषी भी इसके अन्तर्गत स्थान पा सकते हैं ? यह भी विवाद का विषय है कि हम वर्तमान गुजरात में बसे कवियों को ही इस विषय के अन्तर्गत स्थान दे रहे हैं या उन कवियों को भी, जो जन्म से गुजरात में बड़े हुए लेकिन आज गुजरात प्रदेश के बाहर कार्यरत हैं । और विभिन्न रूपों में गुजरात से जुड़े हुए हैं । जब हम "गुजरात" शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारे मन एवं मस्तिष्क में असंख्य प्रश्न जन्म लेते हैं । आज कुछ ऐसे भी कवि हैं जो अन्य प्रदेश के हैं और कुछ

सालों के लिए गुजरात में रहे और फिर गुजरात छोड़कर अन्य प्रदेश में चले गये हैं । कुछ कवियों का जन्म अन्य प्रदेश में होते हुए भी उनका कार्यक्षेत्र गुजरात रहा अर्थात् अन्य भाषा-भाषी कवियों जिनका जन्म गुजरात में नहीं हुआ है परन्तु उनका कार्यक्षेत्र गुजरात रहा है, मैंने अपने शोध-प्रबन्ध में उनको भी स्थान दिया है ।

मैंने "गुजरात" शब्द का दायरा बड़ा ही विस्तृत रखा है जिसके परिणामस्वरूप हम अधिक से अधिक तथा उभरते हुए नये कवियों को भी प्रकाश में ला सकें । मेरे विचार से "गुजरात" केअन्तर्गत हम उन कवियों को मान रहे हैं जो गुजराती हो, अन्य भाषा-भाषी हो तो उसकी जन्म भूमि अथवा कर्मभूमि गुजरात रही हो या जन्म गुजरात का होते हुए भी आज अन्य प्रान्त में कार्यरत हो, या जो अन्य प्रदेश में रहते हुए भी खुद को गुजराती मानते हो या स्थानित हो अथवा जिनका कार्यक्षेत्र गुजरात रहा हो या कुछ समय के लिए नौकरी के सिलसिले में गुजरात में बसे हो और फिर अन्य प्रान्त में चले गए हो आदि ।

संक्षिप्त में मेरा अभिप्राय यह है कि किसी न किसी रूप से जिनका नाता गुजरात से रहा हो उनको मैंने अपने विषय के अन्तर्गत स्थान दिया है । जैसे श्री नरेश महेता, श्री रामदरश मिश्र, श्री भानुशंकर महेता आदि ।

प्रस्तुत महानिबंध की विशिष्टता है - प्रश्नावली । मैंने आधुनिक काल के कवियों एवं उनकी पुस्तकों के बारे में गहन अध्ययन किया । उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में उनका व्यक्तिगत मंतव्य जानना मेरे लिए आवश्यक था । इसलिए मैंने एक प्रश्नावली तैयार की । उसमें 32 प्रश्न दिए हुए थे । इन प्रश्नों के द्वारा मैं प्रत्येक साहित्यकार की रचनाएँ, उनकी रचना प्रक्रिया, जीवन-दर्शन, साहित्य के प्रति उनका दृष्टिकोण, उनकी प्रिय कृति तथा उनकी विविध प्रवृत्तियों का सम्यक रूप से विश्लेषण करके समग्र रूप से उनके काव्य का अध्ययन करना चाहती थी । साथ ही मैं उन्हीं के हस्ताक्षर द्वारा व्यक्त उनके मनोभावों को वाचा देना चाहती थी जिससे इस ठोस प्रमाण को किसी के भी द्वारा नकारा न जा सकें । मैंने इस महानिबंध में प्राप्त काव्य कृतियों का एवं कवियों का यथाशक्ति ~~विश्लेषण~~ करने का प्रयास किया है ।
विवेचन

पिछले 150 वर्ष (1856 से 1996) के गुजरात के दिवंगत एवं विद्यमान साहित्यकारों की संख्या 300 के करीब होती है । उनमें कविता एवं गुणवत्ता की दृष्टि से करीब 90 कवियों को अध्ययन के लिए लिया गया है । इन 90 कवियों में 35 के करीब वे हैं जिन्होंने मेरे द्वारा प्रेषित प्रश्नावली का मनोयोगपूर्वक प्रत्युत्तर देने का कष्ट सहर्ष स्वीकार किया । शेष में से कुछ ऐसे हैं जिनको कुछ कारणवशात् प्रश्नावली भेजी नहीं जा सकी और कुछ ऐसे हैं जो गुजरात में हिन्दी कविता के प्रचार प्रसार में अधिकांश रूप से सक्रिय रहे हैं । कुछ ऐसे हैं जिनके विषय में न हिन्दी साहित्य के इतिहास में उल्लेख मिलता है न तो गुजराती साहित्य के इतिहास में । इन 90 कवियों में कुछ कवि ऐसे अवश्य हैं जिनकी कृतियों का निर्देश मिश्रबन्धु विनोद, आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी के इतिहास, बृहद हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा हिन्दी साहित्य कोश - 2 में मिलता है ।

हिन्दी साहित्य अकादमी गुजरात राज्य द्वारा प्रकाशित गुजरात के हिन्दी साहित्यकार (द्वितीय संस्करण) में निर्दिष्ट कवियों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है । प्रसन्नता की बात है कि प्रायः संपर्कित अधिकांश कवियों ने मुझे अपनी प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाओं को भेंट देकर अमूल्य सहयोग दिया है । परिणाम -स्वरूप प्रस्तुत कार्य को अधिकाधिक व्यापक एवं अच्छे रूप में सम्पन्न करने का मेरा उत्साह बढ़ता रहा ।

स्वीकृत कवियों को सरल अध्ययन की दृष्टि से प्रमुख एवं गौण कवियों के रूप में निर्दिष्ट किया गया है । गौण कवियों में भी इस बात का ध्यान रखा गया है कि जिनका एकाद काव्य-संग्रह या कुछेक कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हो और जो आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा पत्र-पत्रिकाएँ आदि के द्वारा समाज के सन्मुख उपस्थित हो सके हों । इन कवियों का निर्देश ऐतिहासिक काल क्रम की दृष्टि से किया गया है और इनकी रचनाओं के आधार पर गुजरात के आधुनिक हिन्दी कविताओं की कथ्यगत एवं शिल्पगत विविध प्रवृत्तियों की विवेचना की गई है ।

गुजरात से प्रकाशित होनेवाली अगली कविता, चेतना, उत्तरा, भाषासेतु, रैनबसेरा, राष्ट्रवीणा, सुधाबिन्दु जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त पत्रिकाओं में विविध रूप से लिखनेवाले कवियों की रचनाओं को भी यथास्थान उद्धृत किया गया है । इसके उपरांत

केन्द्रीय सरकार के बड़े-बड़े संस्थान जैसे ओ०एन०जी०सी०, आई०पी०सी०एल०, बैंक, रिफाइनरी आदि द्वारा प्रकाशित होनेवाली पत्रिकाओं में लिखनेवाले गुजरात के कवियों की संख्या अधिक है । अतः कई कवियों को इस चयन से जान-बूझकर छोड़ दिया गया है कि वे अभी लिख रहे हैं । उनको सशक्त हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित होने के लिए थोड़ी देर और प्रतीक्षा करनी है ।

सरकारी एवं गैरसरकारी हिन्दी संस्थाओं द्वारा साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक कवि गोष्ठियों एवं समारोहों का समय-समय पर आयोजन आधुनिक हिन्दी कविता के प्रचार एवं प्रसार में विशिष्ट योगदान देता है । परिणामस्वरूप जनता भी हिन्दी काव्य के प्रति आकृष्ट हो रही है । इस प्रकार गुजरात में हिन्दी साहित्य विशाल वट वृक्ष के रूप में फैलता जा रहा है ऐसा हम कह सकते हैं ।

गुजरात के महानगरों और नगरों में ही नहीं अपितु प्रत्येक छोटे-बड़े शहरों तक में हिन्दी कवियों की संख्या दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ रही है । मैं अपने सर्वेक्षण के आधार पर कह सकती हूँ कि अब तो गुजरात के सूरत, बड़ौदा, अहमदाबाद, राजकोट आदि महानगरों व नगरों के कवियों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है । समय की व्यापकता एवं संख्या की अधिकता को देखते हुए मुझे प्रतीत होता है कि गुजरात में आधुनिक हिन्दी काव्य पर विविध आयामों से अभी अनेक शोध-ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं । "गुजरात में हिन्दी साहित्यकार के प्राकट्य में डॉ० अम्बाशंकर नागरजी का दृष्टव्य एवं मंतव्य है कि - पश्चिमांचल के इस सर्वाधिक सम्पन्न प्रदेश ने व्यापार व्यवसाय एवं उद्योग-धंधा एवं सरकारी-गैरसरकारी नौकरियों के लिए भारत के सभी प्रदेश के लोगों को आकर्षित किया है, जिनमें हिन्दी भाषियों की संख्या सर्वाधिक है । यहाँ के औद्योगिक प्रतिष्ठानों, निगमों, बैंकों, स्कूल-कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में बाहर से आकर बसे हिन्दी भाषा भाषी पर्याप्त संख्या में है । इसमें से कितने ही लोग साहित्य में भी रूचि रखते हैं और हिन्दी में कविता, कहानी, उपन्यास आदि लिखते हैं ।" अर्थात् गुजरात में हिन्दी साहित्य के विकास में इनका सहयोग अधिक मात्रा में हम मान सकते हैं । इसका उल्लेख "नयी धरती नया आकाश" काव्य संकलन में भी हुआ है ।

प्रकरण व्यवस्था :

प्रथम प्रकरण में गुजरात में हिन्दी भाषा के विकास के सन्दर्भ में मैंने गुजरात शब्द की व्युत्पत्ति, व्याख्या, भौगोलिक सीमा एवं परिस्थितियाँ, ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण देकर इन सब के परिप्रेक्ष्य में गुजरात में हिन्दी के उद्‌भव एवं विकास का विवेचन एवं विश्लेषण किया है ।

द्वितीय प्रकरण में आधुनिकता की परिभाषा एवं आधुनिक काव्य की पृष्ठभूमि तथा काव्यांदोलन के विषय में विस्तृत रूप से चर्चा की है । मैंने गुजरात में आधुनिक हिन्दी काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का विषद रूप से परिचय दिया है ।

तृतीय प्रकरण की विशिष्टता है प्रश्नावली । जिसका उल्लेख मैंने प्रारम्भ में ही किया है । प्रश्नावली के द्वारा कवियों के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारधारा से विस्तृत परिचय कराने का मेरा प्रयास रहा है । प्रस्तुत प्रकरण में 35 कवि ऐसे हैं जिन्होंने मेरे प्रश्नों का लिखित रूप में प्रत्युत्तर दिया है और 3 शेष कवि ऐसे हैं जिनके बारे में अन्य स्रोतों से आवश्यक जानकारी प्राप्त की है ।

चतुर्थ प्रकरण में स्वीकृत कवियों की कृतियों की भावगत (कथ्यगत) विशेषताएँ सम्बद्ध है । इसमें मैंने विभिन्न कवियों की समाज, राष्ट्र, विश्व ~~से सम्बद्ध~~, नारी, एकाकीपन, जीवन दर्शन, आध्यात्म सन्दर्भ विचारधारा, प्रकृति, श्रृंगार, आतंकवाद, औद्योगीकरण, पर्यावरण आदि मुद्दों का विवेचन किया है ।

कलापक्ष नामक पाँचवे प्रकरण में मैंने आलोच्य कवियों की रचनाओं में उपलब्ध विभिन्न भाषारूप, छंद, अलंकरण, प्रतीक-विधान, बिम्ब-विधान, मानवीकरण, व्यंग्य चेतना, रस आदि का सोदाहरण विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकर किया है ।

छठा प्रकरण काव्यरूप के बारे में है । इस प्रकरण में मैंने आलोच्य कवियों द्वारा स्वीकृत या आजमाये गए विभिन्न काव्यरूपों तथा प्रबन्ध, महाकाव्य, आख्यान, खंड काव्य, गज़लें, हाईकु, सोनेट, लम्बी कविता, छांदस-अछांदस, लघु कविताएं, मुक्तक आदि का सोदाहरण विवेचन किया है ।

सातवें प्रकरण में मैंने ऐसे कुछ कवियों का साक्षात्कार किया जिनको गुजरात की हिन्दी कविता के उभरते सशक्त हस्ताक्षर कहा जा सकता है और जिनका गुजरात के अधुनातन हिन्दी कविता के रूप निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है ।

उपसंहार :

सारे शोध प्रबन्ध के विभिन्न अध्यायों के निष्कर्षों का जिक्र करते हुए गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास की भावी संभावनाओं के प्रति संकेत किया है । इसके साथ ही मैंने ये भी बताने का प्रयास किया है कि मैंने गुजरात का आधुनिक हिन्दी काव्य सारे भारत की और विशेषकर गुजरात की अनेकविद गतिविधियों का दर्पण है ।

अंत में आलोच्य कवियों की काव्य कृतियों का तथा अन्य सहायक ग्रन्थों का सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में विवरण दिया है ।

वडोदरा
दिनांक 28-5-1998

S. K. Chandratre
सुनिता के. चन्द्रात्रे